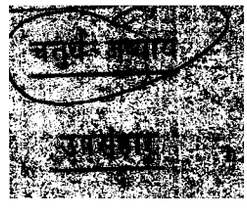

अध्याय : 4

उ प सं हा र

भीष्म साहनी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने के बाद, मैं इस निष्कर्ष तक पहुँची हूँ कि भीष्म साहनी एक उच्च कोटि के संघर्षशील और सादगी से रहनेवाले एक महान साहित्यकार हैं। भीष्मजी जिस परिवार में जन्में वह परिवार बड़ा अमीर नहीं था। एक व्यापारी परिवार था। उनके घर की रहन सहन में कोई आडंम्बर नहीं था, सादगी थी। उनके माँ-बाप के संस्कार बहुत ही सुसंस्कृत होने के कारण भीष्म साहनी और उनके भाई दोनों को रामलक्ष्मण जैसा आदर्श भाई की तरह रहना सिखाया था। जहाँ वे रहते थे वह छोटासा शहर था उस वक्त भारत देश की स्थिति को उन्होंने अपने आँखों से देखा था। और उन्होंने मध्यवर्गीय लोगों के बीच रहकर उन लोगों के जीवन को देखा है। उन्होंने अपने बचपन के शारीरिक कमजोरी, बीमारी का भी वर्णन किया है। साहित्य और इतिहास में उन्हें दिलचस्पी है। वे राष्ट्रभावना से प्रेरित होकर संवेदनशील सेवाभावी वृत्ति के कारण साहित्य की ओर प्रेरित हुए और अपनी लेखनी उठा ली और साहित्य के रूप में वास्तविकता समाज के सामने रख ली है। भीष्म साहनी हमारे सामने अनेक रूपों में आये हैं। प्राध्यापक, व्यापारी, अनुवादक, संपादक, अभिनेता. कुशल संगठक, राजनीतिक कार्यकर्ता इसतरह वे सादगी पसन्द सादामिजाज इन्सान हैं।

भीष्म साहनी ने खूब लिखा है, नाटक, कहानियाँ, उपन्यास, जीवनी सबकुछ। साहित्य को पढ़ना और समेटना और समीक्षा करना बहुत ही कठिन बात है। उनकी कुछ उपन्यासों का अध्ययन करने के बाद पता चलता है कि, उनका सारा कृतित्व भारत देश में रहनेवाले मध्यवर्ग, निम्न वर्ग, सामान्य जनता, ग्रामीण तथा शहरों में रहनेवाले लोगों के दुःख, दर्द, पीड़ा, संघर्ष, विड़म्बनाओं के साथ

संघर्ष करते हुए , रोजी रोटी के लिए जीते हुए लोगों का सजीव चित्र उनकी रचनाओं में देखा जा सकता है।

भीष्म साहनी ने उनके लेखकों के साहित्य का अध्ययन किया उनका भी उन पर गहरा प्रभाव रहा है। यशपाल, प्रेमचंद, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव और विदेशी साहित्यकार टालस्टाय से प्रभावित होकर उन्होंने अपने साहित्य को प्रभावी और प्रगतिशील बना दिया है। हर एक साहित्यकार को साहित्य लिखने के लिए साधना की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार भीष्म साहनी भी इन महान साहित्यकारों के साहित्य से प्रेरित होकर अपने उपन्यासों में साम्प्रदायिक विभाजन, आर्थिक, राजनीतिक आदि समस्याओं का चित्रण किया है। उनके पास सूक्ष्म दृष्टि है। उन्होंने सिर्फ यथार्थ का चित्रण न करते हुए हमारे देश में रहनेवाले समाज में जो कुछ घटित हो रहा है और उसका इतिहास के साथ संस्कृति के साथ समन्वय करके समाज के लोगों के जीवन को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा मनुष्य को मानवीयता की दृष्टि प्रदान करने का सफल प्रयत्न किया है।

उन्होंने आधुनिक प्रगतिशील जीवन का भी चित्रण किया है। लेकिन भीष्मजी अपने इतिहास और संस्कृति को भूले नहीं और भूल भी नहीं सकते। समाज की जीवनदृष्टि, आशा-निराशा, आकांक्षा, पीड़ा, दुःख, दर्द, समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है और इन सभी समस्याओं को अभाव, संघर्ष, द्वंद, जय-परायज, उत्तेजना, व्याकुलता, चिंता आदि को प्रगतिशील दृष्टि से देखा है। भीष्मजी की रचनाएँ पढ़कर हमें महसूस होता है कि अपने साहित्य में जीवन का अतीत, जीवनानुभव से प्रेरणा लेकर उन्होंने अपने साहित्य की उत्कृष्ट रचना की है। यह सब पढ़कर उनके बारे में हम कह सकते हैं कि, भीष्म साहनी को अपनी राष्ट्रियता और जातियता के प्रति स्वाभिमान है। "तमस" जैसी रचना पढ़कर लेखक ने साम्प्रदायिकता जैसी घिनौनी समस्या का विरोध किया है।

भीष्म साहनी क्रांतिकारी लेखक हैं। उन्हें अपने देश के प्रति सहानुभूति है। आज हमारे देश में राष्ट्रियता और एकता की आवश्यकता है। इस देश में

अलग अलग सम्प्रदाया के लोंग रहते हैं। इन सभी में एकता, स्नेह की जरूरत हैं। हिंदु-मुस्लिम इसतरह की जातियता को नष्ट करने की जरूरत हैं। भीष्मजी की "तमस" की रचना साम्प्रदायिक दंगे और विभाजन इन सामाजिक दंगों की संवेदना के धरातल पर साधारण जनता की दुरावस्था, दयनीयता का वर्णन इस उपन्यास में किया है।

आज़ादी के पहले देश में सांम्प्रदायिकता समाज में कितनी फैली थी, इसी वजह से राजनीतिक कुटिलता अपना स्वार्थ किस प्रकार हासिल करती है और राजनीति के षड़यंत्र में साधारण जनता किस प्रकार शिकार बनती है।। हर बातों का "तमस" में भीष्मजी ने चित्रण किया है।

भीष्म साहनी का "तमस" उपन्यास सभी दृष्टि से श्रेष्ठ है। उनके सभी उपन्यासों में यह उपन्यास ख्याति प्राप्त है। यह उपन्यास पाठक को समाज के साथ जोड़ने का प्रयास कर जीवन के सच्चे अनुभव को महसूस करता है।

भीष्म साहनी का पहला उपन्यास "झरोखे" इसमें अपने नगरों अथवा महानगरों में रहनेवाले मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्ग के जीवन की समस्याओं का चित्रण किया है। निम्नमध्यवर्गीय हिंदू परिवार की परम्पराओं और निष्ठाओं का चित्रण किया है। इसमें धार्मिक विडम्बनाएँ, रिश्ते, संघर्ष, अंधश्रध्दा इसका चित्रण किया है। भीष्मजी का यह उपन्यास आत्मकथात्मक ही है, उनके बचपन के बारे में है, इसमें सामन्तवादी जीवन दर्शन और धर्म के कुप्रभाव को स्पष्ट किया है।

भीष्म साहनी का यह उपन्यास भारतीय समाज के हजारों अन्तोर्वरोधों से भरा है। इसमें हिंदु-मुस्लीम कुण्ठाओं की समस्या का चित्रण है। यह समस्या एक व्यक्ति से जुडी नहीं है तो सारे समाज के साथ जातिय और धार्मिक कुण्ठाएँ व्यक्त की है। उनकी माँ अंधश्रध्दालू भारतीय नारी है। पिता कट्टर आर्यसमाजी हैं। इसका भी वर्णन उपन्यास में किया है। भीष्म साहनी के पिताजी मुस्लिमों को "म्लेंच्छ" समझते हैं, अपने बच्चों को उनसे अलग रखते हैं। इन सभी बातों के कारण धार्मिक-दार्शनिक उन्माद के कारण राष्ट्रिय संस्कृति का विचार घोर साम्प्रदायिक

समस्या बनती है। भीष्मजी ने इस कथानक में तुलसी जैसे पात्रों को लेकर विभिन्न परिस्थितिओं और घटनाओं के माध्यम से चरित्र-चित्रण किया है। इसमें लेखक ने सामंन्तवादी जीवन-दर्शन और धर्म के कुप्रभाव को स्पष्ट किया है।

भीष्म साहनी का तीसरा उपन्यास है "मय्यादास की माड़ी"। इस उपन्यास का कथानक समस्याप्रधान होने से बचा है। लेखक ने चार पीढ़ियों की कथा से तत्कालिन भारत के समूचे परिवेश को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। इसलिए यह कथा परिवार की कथा न लगकर तत्कालिन भारत की कथा लगती है। उन्नसवीं शताब्दी के सामन्तवाद का जन्म और उत्थान से संबंधित है। दीवान धनपतराय, दीवान मय्यादास इन दोनें में झगड़े और अंग्रेजों के तरफ से षडयंत्रों का प्रयोग इस उपन्यास में किया है। भीष्म साहनी ने पूर्वदीप्त शैली से इस उपन्यास की कथा का विस्तार किया है। भाषाशैली की दृष्टि से भी यह उपन्यास बहुत सफल है। भाषा सरल, सरस, प्रवाहमयी है। दीवान मय्यादास और धनपतराय के चरित्र से कथा आगे बढ़ी है।

भीष्म साहनी का चौथा उपन्यास "कडियाँ" है। इस उपन्यास की कथा हृदयस्पर्शी होने के साथ-साथ सहजता और विचारों-तेजक भी है। इसमें अनेक अन्तर्विरोध, विसंगतियाँ और विडंम्बनाएँ का वर्णन किया है। उनके इस उपन्यास में मध्यवर्गीय पति-पत्नियों में तलाक का कारण, युगीन संस्कार, परिवेश और आधुनिकता के प्रभाव को मानते हैं। इसमें विवाह और आधुनिक युग की सेक्स की समस्या इन कारणों से दाम्पत्य और उनका टूटता परिवार इसका गहराई से चित्र अंकित किया है। लेखक ने इससे स्पष्ट किया है कि पारिवारिक जीवन को बाँधनेवाली कडियाँ चाहे जितनी मजबूत हो, उनका टूटना आधुनिक जीवन की नियति है। इसे जोड़ने बजाय इसे ढूँढना उचित होगा। भीष्म साहनी इस समस्या का समाधान तलाक के रास्ते ढूँढते हैं।

भीष्म साहनी का पाँचवा उपन्यास "बसंती" है। इसमें ग्रामीण मजदूर शहर में आकर मजदूरी करते हैं। वह शहर आकर अपना श्रम बेचने के लिए

मजबूर हैं, यही उसकी नियति है। यहाँ तक कि पैसे के लिए अपनी गैरकानूनी झोपडियाँ भी वह अपने हाथों से ही तोड़ डालता है। लेखक की दृष्टि से निम्नमध्यवर्ग के हितशत्रू, राजनेता, व्यापारी, उच्चवर्ग, सामंन्त और पूँजीपति लोग हैं। यही लोग जनसामान्य का शोषण करते हैं। लेखक इन सभी समस्याओं को सांस्कृतिक ऐतिहासिक भूमिका में देखते हैं।

इसप्रकार विभिन्न व्यक्ति, लेखक, परिवार, परिस्थिति, मार्क्सवाद अपने जीवन का अतीत, जीवनानुभव से प्रेरणा लेकर भीष्म साहनी ने अपने उपन्यासों की महत्त्वपूर्ण और उत्कृष्ट साहित्य रचना की है।

भीष्म साहनी के उपन्यासों का अध्ययन सूक्ष्मता से करने पर उनके उपन्यासों में पात्रों का चरित्र-चित्रण देखते हुए लगता है कि अपने कुछ ऐसे पात्रों का निर्माण किया है जो दूर तक प्रभाव को छोड़ जाते हैं, उनमें "बसंती" उपन्यास की "बसंती", "तमस" के जरनैल रिचर्ड, "कडियाँ" की प्रमिला, "झरोखे" के विद्रोही बलदेव राजो, "मय्यादास की माड़ी" के दीवान धनपतराय आदि ऐसे ही पात्र हैं। उनके अपने-अपने गुण हैं, जो पाठक पर बरबस ही अमिट छाप छोड़ देते हैं।

भीष्म साहनी के उपन्यास में पात्र और घटनाओं का प्रभाव ज्यादा है। उनके पात्र समाज के विस्तृत फलक से लिए गए हैं। उनका हर एक पात्र किसी न किसी वर्ग विशेष का प्रतिनिधित्व करता है। उन्होंने उपन्यास के प्रमुख पात्र हो या गौण पात्र हो पात्र का उद्‌घाटन सूक्ष्म तरीके से किया है। भीष्मजी ने पात्रों का चरित्र-चित्रण करने के लिए "फ्लेशबैक शैली" को अपनाया है। हर एक पात्र के अंतर्बाह्य दोनों रूप का उद्‌घाटन किया है। नारी के पात्र के चित्रण में तो नारी के जीवन की व्यथा उनकी समस्या, और वह समस्या आज भी उनके सामने खड़ी है। एक नारी पात्र के द्वारा उन्होंने हजारों नारियों के जीवन की समस्याओं को वास्तविकता को प्रस्तुत किया है।

"तमस" में भीष्मजी ने साम्प्रदायिकता रूपी अंधकार से निकलकर मानववादी उजाले की कामना की है, जिसमें व्यक्ति, समाज, देश तथा विश्व शांति के निर्मल आलोक है। उन्हीं सामाजिक प्रश्नों जीवन-मूल्यों और समस्याओं का उद्‌घाटन किया है, और समाजवाद तथा प्रगतिशीलता में समन्वय स्थापित करने की कोशिश की है। उन्होंने साम्प्रदायिकता, धार्मिक मिथ्य को अनावृत्त किया है क्योंकि वही समाज को विकृत बना देती है। इसप्रकार उन्होंने मानव को मानव के प्रति प्रेमभाव प्रदान करने का सफलता से प्रयास किया है। इसमें संवाद सुबोध संक्षिप्त एवं मार्मिक है। लेखक ने समाज से संबंधित समस्याओं का उनकी अनुभूतियों का विचारों का प्रभावपूर्ण चित्रण करने के लिए संवाद उपयुक्त बन गये हैं। भारतीय जनता की रचना नस्ल, उनकी श्रध्दा, रूढि, परंपरा, ऐतिहासिक उदात्तता का परिचय लीजा-रिचर्ड के संवादों से मिलता है। हिंदुओं के प्रति मुसलमानों की घृणा-इर्षा, द्वेष का परिचय राजनीतिक पार्टियों की अवसरवादिता, जनसाधारण लोगों का भोलापन, धार्मिक संघटनाओं की धर्माभिमानता का प्रभावी स्पष्टीकरण करने में भीष्मजी सफल हुए हैं।

भीष्म साहनी के उपन्यासों में संवाद प्रवाहयुक्त, स्वाभाविक, पात्रानुकुल प्रंसगानुकूल हैं। साम्प्रदायिक दंगों का निर्माण विनाशलीला का वातावरण चित्रित कर और उसकी भयावहता का भी परिचय दिया है। खुद दूर रहने की प्रेरणा देते हैं।

भीष्म साहनी ने अपने सभी उपन्यासों में देशकाल वातावरण का सजीव और रोचक चित्रण किया है। उनके किसी भी उपन्यासों में तिथिक्रम का उल्लेख नहीं है, लेकिन पाठक को पढ़ने के बाद महसूस होता है कि उन्होंने किस काल परिवेश का चित्रण किया है। अपने उपन्यासों में आधुनिक भारतीय समाज का सजीव चित्रण कथानक, पात्र, संवादों द्वारा पाठक के सामने सफलता, उत्कृटता के साथ प्रस्तुत किया है।

भीष्म साहनी के व्यक्तित्व का प्रभाव भाषा और शैली पर व्यापक रूप से पड़ा है। उनके उपन्यासों में अंग्रेजी, रूसी, पंजाबी और हिन्दी भाषा को छोड़कर

अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू और हिन्दी की ठेठ या जनसामान्य की भाषाशैली का प्रयोग उपन्यासों में किया है।

इसप्रकार भीष्म साहनी के सभी उपन्यास सभी दृष्टि से श्रेष्ठ और उत्कृष्ट कोटि के हैं और प्रभावपूर्ण आकर्षक माने जाते हैं।

भीष्म साहनी ने "तमस" इस उपन्यास में देश विभाजन की सच्ची गाथा प्रस्तुत की है। भारत देश की आज़ादी के लिए विभिन्न आंदोलन हुए। वह युग संघर्षमयी समस्याओं का युग था। एक ओर अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह, स्वतंत्र भारत की माँग थी तो दूसरी ओर स्वतंत्र पाकिस्तान की माँग हो रही थी। अंग्रेज-मुसलमान और हिन्दू इन तीनों जातियों में एक-दूसरे के प्रति द्वेष भावना उत्पन्न हुई थी अंग्रेजों ने 1947 में भारत छोड़ने का निर्णय लिया लेकिन जाति के नाम पर हिन्दुओं का हिन्दुस्तान और मुसलमानों का पाकिस्तान में विभाजन हुआ। यह भारत विभाजन दंगे-फसाद, इन्सानों की हत्याएँ, आगजनी, बलात्कार, अराजकता, क्रूरता की जा रही थी। नत्थू द्वारा सूअर मरवाने की घटना इसतरह की घटनाओं का निर्माण कर अंग्रेजों ने साम्प्रदायिक शक्तियाँ सक्रिय बनायी। इसतरह की अनेक घटनाएँ भीष्म साहनी ने अपने आँखों से देखी है। उस समय वे पंजाब में थे। अपनी आँखों देखी घटनाओं का चित्रण इस उपन्यास में किया है।

भीष्म साहनी पंजाब की देन है। 1947 में हमारे देश का विभाजन हुआ, तब वे पंजाब में थे, बाद में वे दिल्ली गये। लेखक ने विभाजन समय की समाज की वास्तविक स्थिति का "तमस" में चित्रण किया है। जब लेखक दिल्ली में थे, उस समय उन्होंने विभाजन कालीन समस्याओं को उसके दुष्परिणामों को उन्होंने भोगा है। अंग्रेजों के राजनीतिक षड़यंत्र भारतीय लोगों का अपने धर्म संस्कृति के प्रति अभिमान, हिंदू-मुसलमानों का अलगाव, आदि अनेक विविध बातों से वे पूरी तरह से परिचित हैं। हमारे देश के राष्ट्रिय आंदोलन में सक्रिय सहभागी थे। हिंदू, पंजाब और मुस्लिम पंजाब का विभाजन कितना हिंसात्मक, भयावह और दर्दनाक था, इन सभी छोटी-छोटी समस्याओं का अनुभव किया और सच्चाई "तमस" इस उपन्यास के आधार पर समाज के सामने रखने की पूरी-पूरी कोशिश भीष्मजी ने की है।

विभाजन के समय जो मानव की हत्याएँ हुयी निम्न-सामान्य लोगों पर क्रूर अत्याचार हुए, साम्प्रदायिकता समस्या यह शक्ति किस तरह कार्य कर रही थी। इन साम्प्रदायिकता के कारण हिंदू-मुस्लिम दोनों के मन में नफ़रत की ज्वाला भड़क उठी थी। इन सब समस्याओं को हिन्दी साहित्य में चित्रित करने का प्रयास अनेक लेखकों ने किया। "तमस" के पहले ही साम्प्रदायिक और विभाजन, इस पर उपन्यासों में स्पष्टीकरण किया है। यशपाल का "झूठा सच", कमलेश्वर का "लौटे हुए मुसाफिर", भगवती चरण वर्मा का "भूले बिसरे चित्र", जगदीशचंद्र के "धरती धन न अपना", फणीश्वरनाथ रेणू का "मैला आँचल" आदि उपन्यासों में साम्प्रदायिक उत्पत्ति क्यों हुई ? वैमन्यस्य की भावना मानव में किस प्रकार निर्माण हुई इन सभी साम्प्रदायिकता पर प्रकाश डाला है। हिन्दी साहित्य के उपन्यासों के साथ-साथ भीष्म साहनी के "तमस" कृति भी श्रेष्ठ मानी जाती है।

भीष्म साहनीजी ने अपने उपन्यास में नारी के विविध पहलुओं को चित्रित किया है। निम्नवर्गीय, सामान्यवर्ग, मध्यवर्ग की नारी की समस्या को उनके विडम्बनापूर्ण जीवन को उस पात्र के चरित्र को कल्पना और वास्तविकता के रंग से रंगा है। सामंन्ती वर्ग के नारी का शोषण की समस्या, उनके विविध आयामों का भी चित्रण किया है। उन्होंने विवाह समस्याओं को पूरी तरह से स्पष्ट किया है।

भीष्म साहनी अपने उपन्यासों में दिखाते हैं कि, साम्प्रदायिकता समस्या किस तरह बनी है। उन्होंने अपने सभी रचनाओं का कथानक धीरज के साथ चुना है। वे साम्प्रदायिकता की जड़ तक गए हैं। विशेष रूप से "तमस" में उन्होंने साम्प्रदायिकता जैसे नाजुक विषय पर लिखने के लिए बहुत बड़े धैर्य से काम लिया हैं। इस उपन्यास की रचना उन्होंने शिल्पी की तरह की है। "तमस" में साम्प्रदायिकता की समस्या ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक कारण और समस्या बतायी है और साम्प्रदायिकता के परिणाम धार्मिक कट्टरता, देशविभाजन, धार्मिक क्रूरता, अलगाव आदि के रूप में स्पष्ट किया है। वे स्पष्ट करते हैं कि साम्प्रदायिकता के परिणाम हमेशा हिंदू-मुस्लिम दोनो धर्मो के जनसामान्य को भुगतने पड़ते हैं।

इन दोनों की आपसी टकराहट सिर्फ खून-खराबों तक सीमित नहीं रही तो हर एक आदमी को किसी-न-किसी रूप में लपेटा है। उन दंगों में उन्हें यह भुगतना पड़ता है। लेकिन इन सब के पीछे साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देनेवाला एक आदमी है। उसका बाल भी बाँका नहीं होता। हिंदू-मुस्लिम वैमनस्य की समस्या और देश के जीवन और भवितव्य से संबंधित इन दो समस्याओं का सच्चा रूप भीष्म साहनी ने अपने उपन्यास में यथार्थ रूप से उद्घाटित किया है। साम्प्रदायिकता के सामने गांधीवादी और साम्यवाद का भी पराजय हुआ है। इस उपन्यास में लेखक ने जनता के नैतिक संघर्ष के प्रति समझदारी पैदा करने की पूरी भूमिका निभायी है।

कोई सामान्य से सामान्य व्यक्ति ही वह अपनी भूमि, देश से प्रभावित होता है। लेखक तो होगा ही। भीष्म साहनी भी अपने देश से प्रभावित हैं। अपने बन्धुओं के और कुछ बहनों के कष्टों से वे घायल बनते हैं। अंदर-ही-अंदर उनकी आत्मा तीव्रता से रो पड़ती है और वह अपनी लेखनी उठाते हैं।

निम्नवर्ग अपनी आर्थिक मजबूरी के कारण साम्राज्यवादी, सामन्तवादी, पूँजीवादी व्यवस्था का शिकार भी बनता जा रहा है। वह धार्मिक रूढ़ियों, परंपराओं, अन्धविश्वासों और साम्प्रदायिकता का शिकार बनता है। हमारे देश को आज़ादी मिली है। हर एक व्यक्ति स्वतंत्र है। लेकिन वह स्थिति नहीं है, निम्नवर्ग, सामान्य लोगों को आज़ादी का कोई फायदा नहीं हुआ, आजादी का सर्वाधिक लाभ बड़े सरकारी अफसर, पूँजीपति राजनेताओं को ही हुआ है। "बसंती" नामक का एक पात्र को लेकर झोपड़ी में रहनेवाली निम्नवर्गीय लड़की की समस्या को स्पष्ट किया है और वह लड़की झोपड़ी में रहती है। लेकिन उनकी झोपड़ी बार-बार उजाड़ दी जाती है। तभी एक झोपड़ी मे रहनेवाली लड़की में कितनी अट्ट जिजीविषा और आत्मविश्वास है इसका वर्णन किया है। निम्नवर्गीय अल्हड़ लडकियों से लेकर बूढी औरतों के जीवन में कितनी बड़ी समस्याएँ हैं। लेखक ने अपने उपन्यास में बताया है कि, नारी प्रचलित समाजव्यवस्था के खिलाफ संघर्ष करती हुई जीती है। नारी का शोषण क्यों होता है ? क्योंकि वह आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर नहीं है। पूँजीपति मध्यवर्गीय लोग आर्थिक समस्या का फायदा उठाते हैं। "बसंती" पात्र को लेकर लेखक निम्नवर्गीय नारी के बारीकी से समस्याओं को चित्रित करते

हैं। मानसिक, शारीरिक शोषण होता है। इस उपन्यास में उज़डते-बसते, मजदूरी करनेवाले देहाती लोगों का संघर्षमय जीवन का भी वर्णन मिलता है।

भीष्मजी ने अपने देश में फैला हुआ भ्रष्टाचार और मध्यवर्ग, सामन्तवाद, पूँजीवादी इन सब का जनसामान्य निम्नवर्ग के साथ संघर्ष उन पर दबाव देनेवाले उनका सभी तरह से शोषण करनेवाले शोषकवर्ग का स्पष्टता से वर्णन किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में समाज में जो भी अच्छी-बुरी परिस्थितियों का सही रूप चित्रित किया है। जातिय संगठन, प्रान्तों में संघर्ष, अनाज की समस्या इन सब का वर्णन मिलता है।

भीष्म साहनी एक-एक व्यक्ति के द्वारा उनके मन का सुख दुःख और आंतरिक संघर्ष, इस पात्र के साथ समाज के मन की समष्टिगत समस्याओं का उद्‌घाटन करते हैं। नत्थू या बसंती, तुलसी इन पात्रों के चित्रण में उन्होंने इमानदारी से अच्छाई का चित्रण किया है लेकिन उनके बुराई को भी पूरी इमानदारी के साथ चित्रित किया है। निम्नवर्ग का चित्रण या तमस में हिंदू-मुस्लिमों के दंगे या सामन्तवाद धर्म के कुप्रभाव इस तरह का वर्णन और उनकी समस्या इन सब समस्याओं का वर्णन करना इतना आसान नहीं है। इस प्रकार भीष्म साहनी उत्कृष्ट कोटि के उपन्यासकारों में माने जाते हैं। "बसंती", "तमस" में शोषण की ही समस्या प्रधान है। स्वातंत्र्योत्तर काल में भी शोषण की समस्या और आज की समस्या में कोई ज़्यादा फर्क नहीं। शोषण की समस्या पहले जैसी ही है। उनके रूप में थोडासा फर्क है, उनमें और कुछ बढ़ा है वह है मँहगाई, बेकारी, भ्रष्टाचारी, रोजी-रोटी के लिए अनाज का वितरण, अव्यवस्था जैसी समस्याओं ने भी निम्नवर्गीय सामान्य जनता का शोषण किया है।

आज़ादी मिलने के बाद जो इने-गिने लोगों को राजनीति में नेता या अधिकारी बने उन्होंने उस क्षेत्र में प्रवेश करके पदों का दुरूपयोग ही किया। उन्होंने व्यक्तिगत रूप में आर्थिक लाभों की प्राप्ति की है। बहुत बड़ी समस्या का कारण अर्थलालसा है। हिंदी साहित्य में आर्थिक समस्या के बावजूद अन्य अनेक समस्या

भी प्रकट की हैं। अनाज की समस्या, कपड़ा, शिक्षा, मकान इसप्रकार की अनेक समस्या का चित्रण भीष्म साहनी ने उपन्यासों में स्पष्ट किया है और साथ ही साठोत्तरी हिन्दी के अनेक उपन्यासों में भी आर्थिक समस्याओं का कम-अधिक चित्रण हुआ है।

इन सभी समस्याओं के साथ-साथ सामाजिक समस्या भी भीष्मजी के उपन्यासों में मिलती है। ये समस्या मानवी विकास में बाधा पहुँचाती है। पूँजीवादी समाज व्यवस्था ने व्यक्ति और समाज के संबंधों में तनाव उत्पन्न किये। सामन्तवादी समाज व्यवस्था पर होनेवाले पूँजीवादी, साम्राज्यवादी आक्रमण के कारण सामान्य जनता की रीढ़ टूट गयी। अंग्रेजों के आगमन के कारण उनके नये विचारों और नयी संस्कृति ने समाजव्यवस्था को झकझोर दिया और अंग्रेजों के आर्थिक शोषण ने भारत की संपूर्ण शक्ति को पी डाला। हमारे देश के लोगों को एक तरफ नये विचार और दूसरी तरफ नई शिक्षा से उत्तेजित इन सबका परिणाम मनुष्य पर हुआ वह अलग नये सपने देखने लगा, अधिकार हकों की आवश्यकता महसूस करने लगा इन सबके कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई।

धार्मिक स्तर पर साम्प्रदायिकता की समस्याएँ, सामाजिक स्तर पर नारी संबंधी समस्याएँ, सांस्कृतिक मूल्यों की समस्याएँ आदि समस्याओं का एक वर्ग की निर्मिती हुई। इन सबका परिणाम हर एक पल भ्रष्टाचार की समस्याएँ, हड़तालों का आयोजन और तत संबंधी तोड़-फोड़ की समस्याएँ आदि अनेक समस्याओं की निर्मिती हुई है।

भीष्म साहनी के उपन्यासों की समस्याओं के साथ-साथ हमें हिन्दी साहित्य के साठोत्तरी कालखंड में भी इन आयामों का विकसित रूप देखने को मिलता है। समाज के विभिन्न समस्याओं का रूप इस कालखंड के उपन्यासों में भी देखने मिलता है। भीष्म साहनी के साम्प्रदायिक और विभाजन समस्या के साथ-साथ जनजीवन की समस्याएँ भी पढ़ने को मिलती है। इन समस्याओं ने विविध मुखी रूप धारण कर लिया है। स्त्री-पुरूष संबंधों की विविध समस्याएँ, नयी पुरानी मान्यताओं के

बीच संघर्ष की समस्याएँ, पति-पत्नि के बीच के तनाव की समस्याएँ, शिक्षित-अशिक्षित बेटियों के विवाह की समस्याएँ, भ्रष्टाचार की समस्याएँ, मकानों की कमी की समस्याएँ, प्रेम समस्या, आर्थिक समस्या, राजनीतिक समस्याएँ इसप्रकार अनेक समस्याएँ भीष्मजी के उपन्यासों में पढ़ने को मिलती हैं।

मैंने भीष्म साहनी के उपन्यासों का समस्याओं की दृष्टि से मूल्यांकन किया है। उनके "तमस" इस उपन्यास की साम्प्रदायिक समस्या और विभाजन समस्या का सच्चा स्वरूप प्रकट करते समय इन सभी समस्या के बारे में लघु शोध-प्रबंध स्पष्ट करने का प्रयास किया और मेरे मन में निष्कर्षता के रूप कुछ उद्देश्य और प्रश्न निकाले हैं।

भीष्म साहनी की समस्यामूलक रचनाएँ हैं। उन्होंने अपने सभी उपन्यासों में पूँजीपति से लेकर निम्नवर्ग तक के समाज का चित्रण यथार्थ रूप से अपने उपन्यासों में किया है।

1. भीष्म साहनी का व्यक्तित्व और कृतित्व किसप्रकार के संस्कारों से उभर उठा है ? और उनके परिवार की साहित्य में कौनसी सहायता मिली है ?

2. "तमस" इस उपन्यास में हिंदू-मुसलमानों के झगड़े और उससे उत्पन्न समस्याओं का चित्रण ~~किसप्रकार~~ किया ~~है~~ गया है ।

3. साम्प्रदायिकता के परिणाम "तमस" में स्पष्ट किए गये हैं और आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक समस्याएँ बतायी है और परिणाम भी स्पष्ट किए हैं।

4. भारत विभाजन समस्या बनी और उसके परिणाम क्या क्या हुए ? कौनसे लोगों को ज़्यादा तकलिफे उठानी पड़ी ? इसे विश्लेषित किया गया है।

5. "बसंती" इस उपन्यास में निम्नवर्ग के लोगों के जीवन की समस्याओं का चित्रण किया है। लेखक का उद्देश्य पूँजीपति मध्यवर्गीय लोगों की विड़म्बनाएँ उनकी पाखण्डीयता को खोलना।

6. उनके उपन्यास में अनेक समस्याओं का चित्रण है। सामन्तवाद और उनकी शोषक वृत्ति का चित्रण किया है। किसानों का शोषण, विधवा की समस्या, नारी शोषण और हमारे देश में आकर अंग्रेजों की शोषक वृत्ति का पर्दाफाश किया है।

7. भीष्म साहनी ने उपन्यासों के माध्यम से अपने उद्देश्य को स्पष्ट किया है। उनका मुख्य उद्देश्य शोषक-शोषितों का चित्रण और इनके माध्यम से बनी हुई समस्याओं का चित्रण है। उन्होंने अपने उपन्यास के माध्यम से मनुष्य को मनुष्य बनने की सलाह दी है। हमारा पहला धर्म मानवता है यह स्पष्ट किया है। मनुष्य ही मनुष्य का हित कर सकता है। हमारे देश में जो धर्म और विभाजन के नाम पर झगड़े चल रहे हैं, वे एक दिन ये धर्म, जाति, राष्ट्र हमे विनाश की ओर ही ले जायेंगे। यही उनके नज़र में आयी कुछ बातें और उससे उत्पन्न समस्या को अपने उपन्यास के माध्यम से कल्पना कम और सच्चाई ज़्यादा लिखकर अपने बातों को उजागर किया है।